झंडा गीत

हमारे देश के सबसे पहले झंडा गीत का श्रेय पथिक जी को ही जाता है 26 जनवरी 1930 को लाहौर अधिवेशन सहित समस्त देश में स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा लेने का दिवस मनाया गया था । उसे अवसर पर जो गीत समस्त भारतवर्ष में एक स्वर से गया गया वह विजय सिंह पथिक द्वारा रचित झंडा गीत था ।

प्राण मित्रों भले ही गवना, पर न झंडा यह नीचे झुकना
तीन रंग हैं झंडा हमारा, बीच चरखा चमकता सितारा
शान है यही इज्जत हमारी, सर झुकता इसे हिंद सारी
इस पै सब कुछ खुशी से चढ़ाना, पर न झंडा ये नीचे झुकना
यह है आजादपन की निशानी,इसके पीछे है लाखों कहानी
जिंदा दिल है इसको उठाते, मर्द हैं इस पै सर तक चढ़ते
तुम भी सारी मुसीबत उठाना, पर न झंडा ये नीचे झुकना
रे क्या भूल वो जलियांवाला, या वो डायर का इतिहास काला
गोलियों की लगी जब झड़ी थी, नीव आजादी की तब पड़ी थी
याद हो गर वो खू मैं नहाना, तो न झंडा ये नीचे झुकना
उसने तो था न क्या जुल्म ढाया, पेट के बल पै हमको चलाया
कोसों बच्चों को पैदल भगाया, माँओ–बहनों को घर–घर रुलाया
याद है तुम्हें वह फसाना, तो ये झंडा न नीचे झुकाना
और अब भी न क्या हो रहा है, कौन सुखी की नींद मे सो रहा है
लोग पाते न भरपेट खाना, सच बोलो तो है जेल खाना
है इसी से छिड़ा यह तराना, होना आजाद या मिट ही जाना
पर यह कर लो अहद मर मिटेंगे, पर न इस व्रत से तिल भर हटेंगे
कुछ हो यह मुल्क आजाद होगा, उजड़ गुलशन ये आबाद होगा
गायेंगे आज सब ये गाना, हिंद होगा, न अब जेल खाना
झंडा यह है हर किले पर चढ़ेगा, इसका दल रोज दूंना बढ़ेगा
तीरों तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे

सब कहेंगे कि सर है काटना, पर न झंडा यह नीचे झुकाना
शांत हथियार होंगे, पर वे तोड़ेगे अरि के दुधारे
पर भला हो जो अंग्रेज जागे, लोभ हिंदी हुकूमत का त्यागे
वरना बदला है क्या यह ठिकाना, उनसे बदलेगा सारा जमाना
हे प्रभु शक्ति दो वीर हों ह, टेक रखेंगे सर्वस्व खो हम
हम ही क्या, कह उठे सब जमाना, दूध देखो न माँ का लजाना
प्राण अपने भले ही गवाना, पर न झंडा ये नीचे झुकाना ।